Topic 7. गुण संधि, इत् तथा रपरत्व

उपदेशेऽजनुनासिक इत्।
उपदेशेऽनुनासिकोऽज इत्संज्ञः स्यात्
प्रतिज्ञानुनासिकम्याः पाणिनीयाः।
लण्सूत्रस्थाक्षरवर्णेन सहोच्चार्यमाणो
रेफो रलयोः संज्ञा।

उरण् रपरः।
ऋ इति त्रिंशतः संज्ञेत्युक्तम्।
तत् स्थाने योऽण्, स रपरः सन्नेव
प्रवर्तते। हृष्यादिः। तवल्कारः

ऋ वर्ण (ऋ और ऌ के सभी भेद)
के स्थान पर यदि किसी दूसरे सूत्र
से अ, इ या उ का विधान होता है,
तो वह अ, इ या उ रकार परक
हो अर्, इर् या उर् रूप में अथवा
लकार-परक से अल् इल् या
उल् रूप में प्रयुक्त होता है।

कृष्णर्द्धिः

कृष्ण + ऋद्धि	मूल स्थिति
कृ ष् ण् अ । द्धि	अकार और ऋ कार के स्थान पर गुण एकादेश
कृ ष् ण् अर् द्धि	रपरत्व
कृष्णर्द्धिः	